छाया : आलोक शर्मा

जाता- ॐ वसन्ताय नमः।

इस मूलमन्त्र के बाद ॐ वां हृदयाय नमः इस मन्त्र का दीर्घस्वर और पांचों अंगों से जातियुक्त उच्चाण कर हृदय आदि अंगों में न्यास किया जाता। सिर, मुख, हृदय और पांव आदि स्थानों, अंगों पर न्यास के बाद मूल कुम्भ और पूजासन पर पुष्पांजलि दी जाती। इसके बाद युवा वसन्त का इस रूप में ध्यान किया जाता : जो अपने दो हाथों में पद्म और अन्य में वरद और अभय मुद्रा धारण करते हैं। इसी प्रकार सान्निध्य आसन दिया जाता- दक्षिणतः पद्मावती और वामतः कुसुमावती। इन दोनों को लाल और शुक्लवर्ण से सजाया जाता और गन्धादि को निवेदित किया जाता।

शिव के भैरवस्वरूप की अर्चना

इसके बाद बगीचे में दमनक की अर्चना के क्रम में शिव के भैरव रूप की पूजा की जाती। उनका ध्यान इस प्रकार किया जाता- जो हाथों में शूल और कपाल को धारण करते हैं, जो रक्तवर्ण हैं, रक्तगन्ध की माला और परिधान से अलंकृत हैं, जो ताजा मुण्डों की माला को

धारण करते हैं, शिंजनी और नूपुर, किंकिणी जैसे अनुपम पदाभरण धारे हैं, जिनके हस्त खड्ग, शूल, डमरु, पाश को लिए हैं और दमनकांकित शिर पर आरूढ़ हैं। इस रूप का ध्यान कर गन्धादि निवेदित की जाती और यह मन्त्र जपा जाता- ॐ कामभस्म समुद्भूत! रति बाष्पजलाप्लुत! ऋषिगन्धर्वदेवादि विमोहन! नमोस्तु ते।। इसके बाद परिभ्रमण किया जाता। श्रद्धालु द्वारा ज्ञानखड्ग को धारण किया जाता। शिव कृपा को इष्ट जानकर कुंड, मंडल, लिंग आदि की विशेष परिक्रमा की जाती।

इसी बीच दमन के मूल में मृदा सहित पश्चिम में, ताजा नाल व गन्ध, आमलक से उत्तर में, वाम भाग में उसके पत्र की भस्म से और दक्षिण में अघोर तथा तत्पुरुष की पूर्व में दिशा में पूजा की जाती। यह प्रार्थना की जाती : देवदेव! जगन्नाथ ! वाञ्छितार्थ प्रदेश्वर। हृदिस्थान् पूरयेः कामान् मम कामेश्वरीप्रिये!!

इस प्रकार वसन्त को हमारे यहां आनुष्ठानिक विधियों में महत्ता मिली है। यह ऋतु और उसकी वेला मिथकीय रूप में प्रकृति की आराधना और उसके प्रति सम्मान के भाव की अनूठी अभिव्यक्ति है। लोकजीवन में जिस तरह वसंत वेला अपने ढंग से आनन्द और उल्लास को बिखेरती है, शास्त्रीय परम्पराएं भी उससे अलग नहीं है क्योंकि शास्त्रों ने लोकजीवन ही सर्वतः सारतः ग्रहण किया है।'

'स्वर सरिता' आपको नियमित भेजी जाती रही है, अब इसे निरन्तर संचालित करते रहने के लिए कृपया स्वयं प्रेरणा से सदस्यता शुल्क भिजवा कर सहयोग करें।

एक वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹600 छह वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹3000

- चैक/डी.डी. -'वीणा प्रकाशन', जयपुर (VEENA PRAKASHAN, JAIPUR) के नाम निम्न पते पर भेजें या
- बैंक ऑफ बड़ौदा, जौहरी बाजार, जयपुर के अकाउंट नं. 01150200000933 में वीणा प्रकाशन के खाते में जमा करवाएं।
- बैंक की रसीद के साथ अपना पूरा पोस्टल एड्रेस, पिनकोड एवं फोन नम्बर हमें मेल करें।

वीणा प्रकाशन

हल्दिया हाउस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 फोन - 0141-2572666, 4022623

Email-veenaprakashan@gmail.com website: veenaswarsarita.com